कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

दिल्ली का पहला मुसलमान शासक कुतुबुद्दीन ऐबक था और उसी को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक भी माना जाता है। मोहम्मद गोरी ने भारतीय प्रदेशों को विजय करके उन्हें अपने राज्य का अंग अवश्य बनाया परन्तु वह गोर का सुल्तान था न कि दिल्ली का। परन्तु कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का शासक था। उसने न केवल अपने स्वामी को उसकी भारत-विजय में महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की बल्कि अधिकांशतया वही उन विजयों और उनके संगठन के लिए उत्तरदायी था। इसके अतिरिक्त ऐबक की मुख्य सफलता भारत के तुर्की राज्य को गोर और गजनी के सुल्तानों के स्वामित्व से मुक्त करके उसे स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान करने का प्रयत्न करना तथा गोरी की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न हुई अस्थिर परिस्थितियों में उसे स्थायित्व प्रदान करना था। इसी कारण उसे भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना गया है।

प्रारम्भिक जीवन

कुतुबुद्दीन ऐबक तुर्क था और उसके माता-पिता तुर्किस्तान के निवासी थे। बचपन में निशापुर के काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने उसे एक दास के रूप में खरीदा था। तुर्कों में अपने गुलामों को योग्य बनाने की परम्परा थी। अनेक व्यक्ति अपने गुलामों को

Scanned with CamScanner

साहित्य, कला और सैनिक शिक्षा प्रदान करते थे। अनेक गुलामों को राज्य की उत्तम सेवा करने के योग्य बनाया जाता था और अनेक गुलाम सुल्तानों की सेवा करने के योग्य बनाये जाते थे जिससे उनका अधिक से अधिक मूल्य प्राप्त हो सके। इस कारण उस समय के तुर्क सुल्तानों के अनेक गुलाम बहुत योग्य हुआ करते थे और वे राज्य सेवा में श्रेष्ठतम पद प्राप्त कर लेते थे। इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ई. में हुए अन्हिलवाड़ के युद्ध के पश्चात् खरीदा और वही इल्तुतमिश ऐबक का दामाद और दिल्ली का सुल्तान बना। इसी प्रकार बहाउद्दीन बलबन को इल्तुतमिश ने 1232 ई. में खरीदा और उसी बलबन ने इल्तुतमिश की एक पुत्री से विवाह किया, सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद से अपनी पुत्री का विवाह किया और अन्त में, स्वयं दिल्ली का सुल्तान बना। इसी प्रकार मोहम्मद गोरी के योग्यतम सूबेदार कुतुबुद्दीन ऐबक, ताजुद्दीन एल्दौज और नासिरुद्दीन कुबाचा उसके गुलाम थे। निशापुर के काजी ने ऐबक को सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान की। काजी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों ने ऐबक को बेच दिया और अन्त में, मोहम्मद गोरी ने उसे खरीदा। अपनी योग्यता के कारण ऐबक अपने स्वामी की दृष्टि में उठ गया। ऐबक ने धीरे-धीरे अपनी योग्यता के कारण अमीर-ए-अखूर (अश्वशाला का अध्यक्ष) के पद को प्राप्त करा लिया जो उस समय बहुत सम्मानित पद माना जाता था। प्रो. हबीबुल्ला के अनुसार तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् 1192 ई. में गोरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।

गोरी का सहायक

मोहम्मद गोरी के समय में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये थे। तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) के अवसर पर गोरी के साथ था। गोरी के भारत से वापस चले जाने के पश्चात् उसने अजमेर, मेरठ आदि स्थानों के विद्रोह को दबाया और दिल्ली को अपने अधिकार में किया। 1194 ई. में जब गोरी ने कन्नौज के शासक जयचन्द से चन्दवार नामक स्थान पर युद्ध किया तब भी ऐबक उसके साथ था। उसके पश्चात् उसने अलीगढ़ को जीता, अजमेर के विद्रोह को दबाया, गुजरात की राजधानी अन्हिलवाड़ को लूटा, राजस्थान के कुछ किलों को जीता और 1202-03 ई. में बुन्देलखण्ड के राजा परमार्दीदेव को परास्त करके कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर अधिकार किया। इस प्रकार ऐबक ने अपने स्वामी गोरी को न केवल भारत के विभिन्न प्रदेशों को जीतने में सहायता दी बल्कि समय-समय पर उसकी अनुपस्थिति में जीते हुए प्रदेशों को तुर्कों के आधिपत्य में रखा और राज्य-विस्तार भी किया।

शासक ऐबक

1206 ई. में मोहम्मद गोरी का वध कर दिया गया। उसके कोई पुत्र न था और क्योंकि उसकी मृत्यु अचानक हुई थी, इस कारण उसे अपने साम्राज्य की एकता को कायम रखने के लिए अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने अथवा कोई अन्य व्यवस्था करने का अवसर नहीं मिल सका था। मोहम्मद गोरी की मृत्यु की सूचना पाकर लाहौर के नागरिकों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को लाहौर आकर शासन-सत्ता अपने हाथों में लेने के लिए आमन्त्रित किया। **ऐबक ने लाहौर पहुँच कर शासन-सत्ता अपने हाथों में ले ली यद्यपि उसने अपना राज्याभिषेक गोरी की मृत्यु के तीन माह पश्चात् जून 1206 ई. में कराया।** सिंहासन पर बैठने के अवसर पर उसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की बल्कि केवल 'मलिक', 'सिपहसालार' की पदवियों से ही

Scanned with CamScanner

सन्तुष्ट रहा जिन्हें उसने अपने स्वामी गोरी से प्राप्त किया था। इसी कारण ऐबक ने न अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न अपने नाम के सिक्के चलाये। बाद में गोरी के उत्तराधिकारी गियासुद्दीन ने उसे 'सुल्तान' स्वीकार किया लेकिन उस समय जब ऐबक अपनी शक्ति को स्वयं के प्रयत्नों से दृढ़ कर चुका था। उसी प्रकार ऐबक को नियमपूर्वक अपनी दासता से मुक्ति भी 1208 ई. में प्राप्त हुई क्योंकि गोरी ने अपनी मृत्यु के समय तक अपने किसी भी दास को दासता से मुक्त नहीं किया था। परन्तु कानूनी स्थिति कुछ भी रही हो, वास्तविकता में ऐबक ने 1206 ई. में लाहौर को अपनी राजधानी बनाकर गोरी के भारत के राज्य को अपनी अधीनता में रखने का प्रयत्न किया और उसी समय से उसने एक स्वतन्त्र सुल्तान की दृष्टि से व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। भारत की सत्ता में वह न किसी से साझेदारी करने और न किसी के आधिपत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार था, यह आरम्भ से ही स्पष्ट हो गया था।

कठिनाइयाँ

सिंहासन पर बैठने के अवसर पर ऐबक अनेक कठिनाइयों से घिरा हुआ था। वह अपने **सभी सरदारों से वफादारी की आशा नहीं कर सकता था** बल्कि उनकी ईर्ष्या और व्यक्तिगत आकांक्षाएँ उसके और नव-स्थापित तुर्की राज्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती थीं। तुर्कों ने अफगानिस्तान से लेकर उत्तरी भारत के बंगाल तक के भू-प्रदेशों को अपने पैरों तले रौंद अवश्य दिया था परन्तु वे इसके निर्विवाद स्वामी बनने में अभी तक असमर्थ थे। गोरी ने राजपूतों की शक्ति को दुर्बल अवश्य कर दिया था परन्तु समाप्त नहीं कर सका था और **राजपूत स्थान-स्थान पर तुर्कों का मुकाबला कर रहे थे तथा अनेक स्थानों से तुर्कों को निष्कासित कर रहे थे।** चन्देल शासक ने कालिंजर को पुनः विजय करके तुर्कों के दक्षिण की ओर बढ़ने के मार्ग को रोक दिया था, गहड़वाल राजा हरीशचन्द्र ने फर्रुखाबाद और बदायूँ में अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी और प्रतिहार-राजपूतों ने ग्वालियर को पुनः जीत लिया था। बंगाल में खलजी सरदारों के पारस्परिक झगड़ों ने वहाँ तुर्की-सत्ता को दुर्बल कर दिया था और **बंगाल के खलजी सरदार ऐबक के आधिपत्य को स्वीकार करने के लिए तत्पर न थे।** वास्तव में ऐबक का आधिपत्य सिन्ध, पंजाब, दिल्ली और दोआब तक सीमित था और वहाँ पर भी राजपूत उसकी सत्ता का विरोध कर रहे थे।

परन्तु इनमें भी बड़ी कठिनाइयाँ ऐबक को अपने सम्बन्धियों तथा अपने ही समान गोरी के दास और उसके राज्य के उत्तराधिकारी ताजुद्दीन एल्दौज और नासिरुद्दीन कुबाचा की तरफ से थी। ताजुद्दीन एल्दौज ने गजनी में अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली थी, उसकी पुत्री का विवाह ऐबक से हुआ था और वह ऐबक को अपने अधीन तथा गोरी के भारत के राज्य पर अपना अधिकार मानता था। नासिरुद्दीन कुबाचा उच्छ का सूबेदार था, एल्दौज की एक पुत्री और ऐबक की एक बहिन से उसने विवाह किया था तथा वह भी दिल्ली के राज्य पर अपना अधिकार मानता था। वास्तव में एल्दौज और कुबाचा ऐबक के प्रतिद्वन्द्वी थे। ताजुल-मासिर के आधार पर प्रो. ए. बी. एम. हबीबुल्ला ने और फक्र-ए-मुदब्बिर के आधार पर डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव ने यह लिखा है कि गोरी ने ऐबक को अपने भारतीय राज्य का संरक्षक नियुक्त किया था, उसे 'मलिक' की उपाधि दी थी और उसकी इच्छा थी कि ऐबक भारत में उसका उत्तराधिकारी बने, परन्तु प्रो. के. ए. निजामी इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि

Scanned with CamScanner

गोरी ने अपनी मृत्यु के समय तक अपने गुलाम सरदारों के अधिकारों और अपने उत्तराधिकार के प्रश्न का निर्णय नहीं किया था जिसके कारण ऐबक, एल्दौज और कुबाचा की स्थिति समान थी और उनमें से प्रत्येक अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार अपने-अपने अधिकारों की व्याख्या करने के लिए स्वतन्त्र था। यही नहीं, बल्कि उनका तो यहाँ तक कहना है कि गोरी ने भारत के विभिन्न तुर्की सरदारों को भी ऐबक की अधीनता में नहीं किया था और यदि बहाबुद्दीन तुगरिलखाँ तथा मुहम्मद बख्तियार खलजी जैसे शक्तिशाली सरदारों की मृत्यु पहले ही न हो गयी होती तो वे भी ऐबक के प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध होते। एल्दौज और कुबाचा की भविष्य की गतिविधियों को देखते हुए डॉ. निजामी का कथन सत्य के अधिक निकट दिखायी देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि गोरी की मृत्यु के पश्चात् ऐबक को स्वतः ही भारत का तुर्की राज्य प्राप्त नहीं हो गया था बल्कि उसे इसके लिए कौशल और युद्ध से प्रयत्न करना पड़ा था।

ऐबक की कठिनाई एल्दौज और कुबाचा की प्रतिद्वन्द्विता तक ही सीमित न थी बल्कि ख्वारिज्म के शाह की बढ़ती हुई शक्ति भी उसके लिए एक बड़ा खतरा थी। ख्वारिज्म के शाह की नजर गजनी पर थी। एल्दौज उसकी शक्ति का मुकाबला करने में असमर्थ था। ऐसी स्थिति में यदि गजनी पर ख्वारिज्मशाह का अधिकार हो जाता तो वह दिल्ली पर भी अपना दाव कर सकता था। इस कारण ऐबक की एक मुख्य कठिनाई भारत के राज्य को मध्य-एशिया की राजनीति से पृथक् करना, उसे गजनी के शासकों के कानूनी आधिपत्य से मुक्त करना तथा उसे एक पृथक् स्वतन्त्र राज्य का अधिकार और अस्तित्व प्रदान करना थी।

कार्य

ऐबक का मुख्य कार्य अपने स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करना था। उसने कौशल और कूटनीति से कार्य किया। उसने अपने तुर्की सरदारों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए मना लिया। सम्भवतया, इस कार्य को करने के कारण ही उसे सिंहासन पर बैठने में कुछ समय लगा था। अपनी स्थिति को दृढ़ करने के आशय से ही उसने अपनी पुत्री का विवाह इल्तुतमिश से और अपनी बहिन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा से किया था तथा सम्भवतया कुबाचा ने उसे दिल्ली का सुल्तान स्वीकार कर लिया था। परन्तु एल्दौज की तरफ से खतरा रहा। इस कारण ऐबक सर्वदा लाहौर में रहा। उसे दिल्ली में रहने का अवसर कभी न मिल सका।

सुल्तान गियासुद्दीन ने एल्दौज को दासता से मुक्त करके गजनी का शासक स्वीकार कर लिया था। ख्वारिज्मशाह के दबाव के कारण एल्दौज को गजनी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। उसने पूर्व में पंजाब पर आक्रमण किया। गजनी का शासक होने के नाते वह भारत के तुर्की राज्य को अपने अधिकार में मानता था। ऐबक ने उसका विरोध किया और उसे युद्ध में परास्त करके पंजाब छोड़ने के लिए बाध्य किया। परन्तु गजनी उस समय अरक्षित था और सम्भव था कि ख्वारिज्मशाह उस पर अधिकार कर लेता। गजनी के नागरिकों ने ऐबक को आने के लिए निमन्त्रण भेजा और ऐबक ने आगे बढ़कर गजनी पर अधिकार कर लिया। परन्तु गजनी के नागरिक उससे सन्तुष्ट न रह सके और उन्होंने एल्दौज को आमन्त्रित किया। एल्दौज के अचानक गजनी की सीमा पर पहुँच जाने के कारण ऐबक केवल 40 दिन पश्चात् ही गजनी को छोड़ने के लिए बाध्य हुआ। इस प्रकार **ऐबक का गजनी का अभियान सफल होते हुए भी**

Scanned with CamScanner

स्थायी लाभ का न रहा। परन्तु एल्दौज भी उसके भारत के राज्य पर अधिकार करने में असमर्थ रहा और ऐबक ने दिल्ली के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित रखने में सफलता प्राप्त की।

बंगाल के दूरस्थ सूबा (इक्ता) ने भी ऐबक को परेशान किया। मुहम्मद बख्तियार खलजी के हत्यारे अलीमर्दान खाँ को खलजी सरदारों ने कैद कर लिया था और उन्होंने मुहम्मद शेरा को इस शर्त पर गद्दी पर बैठाया था कि वह दिल्ली की अधीनता स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण आरम्भ में बंगाल एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। परन्तु अलीमर्दान खाँ कैद से भागकर ऐबक के पास पहुँचा। ऐबक ने उसे बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया और उसने वायदा किया कि वह ऐबक के अधीन रहेगा तथा उसे वार्षिक कर देगा। परन्तु खलजी सरदार इस प्रबन्ध को मानने के लिए तैयार नहीं थे। **ऐबक के सरदार कैमाज रूमी के निरन्तर प्रयत्न और युद्ध के पश्चात् ही अलीमर्दानखाँ को बंगाल का सूबेदार बनाया जा सका और बंगाल दिल्ली सुल्तान की अधीनता में हो गया।**

ऐबक को राजपूतों की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला और न वह साम्राज्य-विस्तार की नीति को अपना सका बल्कि राजपूतों ने कुछ स्थानों को उससे छीन लिया और ऐबक उन्हें पुनः जीतने का प्रयत्न भी न कर सका। ऐबक को समय भी थोड़ा प्राप्त हुआ। चौगान (आधुनिक पोलो की भाँति का खेल) के खेल में घोड़े से गिर जाने के कारण 1210 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। उसे लाहौर में दफनाया गया और उसकी कब्र पर एक साधारण स्मारक बना दिया गया।

Scanned with CamScanner